गौ पर टिप्पणी लिखने के पश्चात् मैं प्रो. लक्ष्मीश्वर झा के सम्पर्क में आया। वह अपने व्याख्यानों में समझाया करते हैं कि इस भूमण्डल में आकाश में जिस ऊंचाई पर पृथिवी सूर्य की किरणों को परावर्तित करने लगती है, अवशोषित नहीं करती, वह गौ कहलाती हैू। यह कथन भौतिक  रूप में भले ही अधिक महत्त्व न रखता हो, लेकिन गौ को आगे समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। जब भी पृथिवी गौ बनेगी, वह ऐसे ही बनेगी। जब पृथिवी पर असुरों का भार अधिक हो जाता है तब वह गौ बनकर विष्णु आदि के पास जाती है और उनसे अवतार लेकर पृथिवी का भार कम करने की प्रार्थना करती है। डा. झा के कथन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चाहे गौ पशु हो या पृथिवी हो या मनुष्य हो, वह स्थिति जहां हम सूर्य की किरण का केवल अवशोषण ही नहीं करते, अपितु स्वयं अपनी किरणें भी सूर्य की ओर भेजते हैं, वह स्थिति गौ कही जा सकती है। लेकिन यहां यह आपत्ति है कि ब्रह्माण्ड में चाहे कोई पिण्ड जड हो या चेतन, सभी सूर्य की किरणों का अवशोषण करके उस ऊर्जा का एक अंश बाहर निकाल देते हैं। कोई भी पिण्ड ऐसा नहीं है जो सूर्य की किरणों का सौ प्रतिशत अवशोषण कर लेता हो। लेकिन यदि हम स्वयं भी सूर्य बन जाएं, यदि हमें भौतिक सूर्य की आवश्यकता ही न पडे, तो हम सूर्य की किरणों का परावर्तन कर सकते हैं। कर्मकाण्ड में गौ की स्थिति को रथन्तर साम गान द्वारा प्रदर्शित किया गया है जो सबसे उत्कृष्ट उदाहरण प्रतीत होता है। वहां पृथिवी सूर्य को अपने मुख में धारण कर लेती है। सूर्य उसका पुत्र बन जाता है। फिर वह कहती है - अभि त्वा शूर नोनुमो अदुग्धा इव धेनवः। भा भभा भि भभा - --- -- भा इसलिए कि सूर्य उसके मुख में है जिस कारण वह बोल नहीं पाती है। भा का अर्थ आभा, प्रकाश भी होता है। कहा गया है कि रथन्तर साम द्वारा पृथिवी अपना जो सर्वश्रेष्ठ भाग है, उसे सूर्य में स्थापित करती है। वह अदुग्धा गौ अपने पुत्र सूर्य को दुग्ध पान कराने के लिए व्याकुल है। और सूर्य किससे क्या लेता है, इसका उल्लेख जैमिनीय ब्राह्मण में है -

स ऐक्षताहम् एवेदं सर्वं संवृणजा इति। स वशम् एव दिव आदत्त, क्षत्रं नक्षत्राणाम्, आत्मानम् अन्तरिक्षस्य, रूपं वायोर्, आज्ञां मनुष्याणां, चक्षः पशूनाम्, ऊर्जम् अपां, रसम् ओषधीनां, चरथं वनस्पतीनां, शिश्नं वयसाम्, अर्चिषम् अग्नेर्, हृदयं पृथिव्यै, गन्धं हिरण्यस्य, स्तनयित्नुं वाचस्, सङ्गमं पितॄणां, भां चन्द्रमसः। तद् यद् एतेषां भूतानाम् आदत्त, तद् आदित्यस्यादित्यत्वम्। स य एतद् एवं वेदैष एवादित्यो भूत्वैतस्यां राजासन्द्याम् आस्ते॥2.26॥

इस कथन में वश से अर्थ है जहां वैक्सिंग - वेनिंग, घटना - बढना समाप्त हो गए हों, बांझ स्थिति। वह सूर्य ने अपने पास रख ली है।

यह भौतिक पृथिवी भी हमारे लिए गौ बनी हुई है। यह अपने दुग्ध के रूप में अपने फल, अन्न आदि हमें प्रस्तुत कर रही है। अतः यह कहा जा सकता है कि यद्यपि ब्रह्माण्ड का प्रत्येक पिण्ड ऊर्जा का उत्सर्जन कर रहा है, एक छोटा सा सूर्य बना हुआ है, लेकिन जो पिण्ड ब्रह्माण्ड की ऊर्जा का अवशोषण करके उसे उपयोगी ऊर्जा में रूपान्तरित करने में समर्थ हो गए हैं, उन्हें गौ कहा जा सकता है।

पद्म [१.३.१०५](https://3c-lxa.mail.com/mail/client/dereferrer?redirectUrl=https%3A%2F%2Fsa.wikisource.org%2Fs%2Faxk) ( ब्रह्मा के उदर से गौ की सृष्टि का उल्लेख ), १.९.४३( पितर - कन्या, साध्यों की पत्नी सुकन्या बनना ?), [१.१८.२४४](https://3c-lxa.mail.com/mail/client/dereferrer?redirectUrl=https%3A%2F%2Fsa.wikisource.org%2Fs%2Fajt) ( पुष्कर में स्नान कर मन्त्रपूत गो दान से मोक्षप्रद लोकों की प्राप्ति का उल्लेख ), [१.४८.१२५](https://3c-lxa.mail.com/mail/client/dereferrer?redirectUrl=https%3A%2F%2Fsa.wikisource.org%2Fs%2Fan7) ( ब्रह्मा के प्राक् तेज से वेद व वह्नि तथा परतेज से गौ व विप्र की उत्पत्ति,  गौ - माहात्म्य, पूजा - विधि, कपिला आदि गोदान की विधि, दान फल का वर्णन ), ३.२६.४६ ( गौ भवन तीर्थ में अभिषेक से सहस्र गोदान फल प्राप्ति का उल्लेख ), [४.२३.१२](https://3c-lxa.mail.com/mail/client/dereferrer?redirectUrl=https%3A%2F%2Fsa.wikisource.org%2Fs%2Faxs) ( कार्तिक शुक्ल द्वादशी को गोमूत्र, त्रयोदशी को क्षीर आदि सेवन का निर्देश ), [४.२४.६](https://3c-lxa.mail.com/mail/client/dereferrer?redirectUrl=https%3A%2F%2Fsa.wikisource.org%2Fs%2Fay2) ( गोचर्म मात्र भूमि दान का महत्त्व तथा गोचर्म के परिमाण का कथन ),

=======================================================

वैदिक साहित्य में गौ के एक ओर दन्त तथा हय के दोनों ओर दन्त प्रसिद्ध हैं। इस कथन का रहस्यार्थ ज्ञात नहीं है। हाल ही में दन्त शब्द पर टिप्पणी लिखी गई है लेकिन यह प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है।



इस मेलकी प्रति जिनको भेजी जा रही है, वह वयोवृद्ध इंजीनियर सुबोधकुमार जी गौ के लिए समर्पित हैं।गौशाला के संरक्षक हैं। हाल ही में मैने उनको टेलीफोन करके पूछा था कि सडकों पर घूमते हुए वृषभों में से इतनी दुर्गन्ध क्यों आती है। उनका उत्तर था कि कूडा खाते हैं इसलिए। मैंने कहा कि कूडा तो गाय भी खाती हैं, उनसे दुर्गन्ध नहीं आती। इस विषय में इंटरनेट पर कुछ नहीं मिला।

मेरी एक बहिन का कहना है कि वह गाय को भोजन सामग्री इसलिए नहीं देती कि वह घर के बाहर गोबर करती हैं। दूसरी बहिन का कहना है कि यदि गाय घर के बाहर गोबर करे तो समझ लेना चाहिए कि कार्य सिद्ध हो जाएगा।

उपरोक्त चित्र कर्नूल में यज्ञ में प्रातःकाल 5.30पर लिया गया है। इंटरनेट पर प्राप्त सामग्री काकहना है कि यदि गाय कीआंखें चमकती हों तो यह मैड डिजीज काउ का सूचक है। मुझे पता नहीं है कि क्या प्रत्येक गौ में ऐसा होता है।

मेरे एक परिचित श्री श्वेताश्व चौहान चाहते हैं कि गोबर से बनने वाली गैस को पूरे दबाव पर सिलिंडर में भरने का कोई सरल यन्त्र होना चाहिए।

सुबोध जी ने बहुत दिन प्रयत्न किया है कि गोबर में 4 प्रतिशत ऐसे तन्तु होते हैं जिन्हें दीमक नहीं खाती। उनका कागज बनाने में उपयोग किया जाए।

मुझे संस्कृत पढाने वाले श्री विश्वम्भर देव शास्त्री की आयु अब लगभग96 - 97 वर्ष हो गई है। उनको प्रोस्ट्रेट कैंसर की पहली अवस्था है। वृद्धावस्था में कुछ नहीं हो सकता। इन्दौर की  बनी जैन की गोमूत्र  की ओषधियों के सेवन से इतना तो होगया हैकि मूत्र को निकालने के लिए जो नली लगाई गई थी, वह डाक्टरों ने निकाल दी है।

गाय और भैंस में क्या अन्तर है, यह पता नहीं है। लोग कहते हैं कि दोनों एक जैसी ही तो हैं।चाहे किसीका भी मांस खा लो। यह प्रश्न अनुत्तरित ही है। आभामण्डल का अभ्यास करने वाले साधक के लिए गौ पर ही ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा जाएगा,भैंस परनहीं।